# नीड़ का निर्माण

*हरिवंशराय बच्चन*

## कवि परिचय :

बच्चन का जन्म सन् 1907 में इलाहबाद में हुआ था । उनकी अंग्रेजी की उच्चशिक्षा इलाहावाद तथा कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय (इंलैण्ड) में हुई । वे कुछ दिन अध्यापक हुए, आकाशवाणी में काम किया फिर विदेश विभाग में हिन्दी सलाहकार रहे । बचपन से ही बच्चन जी की रुचि कविता लिखने की थी । उनकी कविताओं में जीवन का, जीने के लिए किये जाने वाले नाना कार्यों का वर्णन हुआ है । इन्होंने जीवन को अत्यंत महत्व दिया । इस कविता में भी जीवन को हरपल जीने की प्रेरणा दी गई है ? विपत्तियों में निडर होकर लड़ते रहने को उत्साहित किया गया है ?

इनकी अनेक रचनाएँ हैं जिन में से 'दो चट्टानों के लिए' उन्हें साहित्य अकादमी की ओर से पुरष्कृत किया गया था । सन् 1976 में उन्हें पद्मभूषण की उपाधि से भी सम्मानित किया गया ।

## यह कविता :

देखा जाता है कि चिड़ियाँ अपने नीड़ या घोंसले को बार-बार बनाती हैं । ऐसे मनुष्य भी नये-नये घरों का निर्माण बराबर करते रहते हैं । रहने के लिए वे उनको बनाते हैं, क्योंकि उनमें अपने बच्चों और परिवार के दूसरे लोगों के प्रति स्नेह भाव होता है । प्राणी की यह जीने की इच्छा अदम्य है । इसलिए नीड़ या घर बार-बार टूटने पर भी पक्षी और नर-नारी उसे बनाते रहते हैं ।

छोटे लोगों का जीवन, छोटी चिड़िया का नीड़, आँधी तूफान में, अंधेरे में, धूल की आँधी में घिर जाता है । अर्थात् पृथ्वी पर बार-बार विपत्तियाँ आती हैं । कभी विपत्ति भयानक होती है तो दिन में रात सा अंधेरा हो जाता है । रात भी घन अंधकार में डूब जाती है । लगता है कि क्या सवेरा नही होगा ? सब के सब भीतत्रस्त हो जाते हैं । इतने में पूर्व दिशा से हँसती हुई उषा-रानी आ जाती है । भयंकर दु:ख से सुख की यह किरण नये जीवन के लिए प्रेरणा देती है । यह स्नेह और प्रेम का आह्वान है । जब बड़े तूफान से पृथ्वी काँप

उठती है, बड़े बड़ पेड़ उखड़ जाते हैं , उनकी डाल पर घोंसले कहाँ उड़कर टूट बिखर जाते हैं और तो और, बड़े बड़े मकान जो ईंट पत्थर से बने होते हैं, बड़े मजबूत होते हैं वे भी ढह जाते हैं । उस वक्त एक छोटी सी चिड़िया नये जीवन की आशा लेकर आसमान पर चढ़ जाती है । वह विपत्ति से डरती नहीं । चाहे जो हो, नीड़ का निर्माण फिर करेगी । कुछ मनुष्य भी ऐसे ही उत्साही होते हैं । आकाश के बड़े बड़े भयानक दाँतों – (वज्रपात, आँधी, तूफान, घने बादल आदि) से उषा मुस्कुराती है । जब बादल गरजते हैं तब चिड़ियाँ चहचहाती भी हैं । तेज हवा के भीतर चिड़िया चोंच में तिनका लेकर उड़ जाती है । वह उनचास पवन (बड़ी तेज हवा) की भी परवाह नहीं करती ।

नाश से दु:ख तो होता है । लेकिन उसको निर्माण या सृजन का सुख दबा देता है । नीचा दिखा देता है । प्रलय होता है । उसके चारोंओर सन्नाटा छा जाता है । लेकिन फिर से नयी सृष्टि के गीत भी बार बार गाये जाते हैं । प्राणी मरता नहीं, बार बार जीता है । इसी जीने को जीवन कहते हैं ।

# नीड़ का निर्माण

**नीड़ का निर्माण फिर-फिर**
**नेह का आह्वान फिर-फिर ।**

**वह उठी आँधी कि नभ में**
**छा गया सहसा अंधेरा,**
**धूलि-धूसर बादलों ने**
**भूमि को इस भाँति घेरा ।**

**रात सा दिन हो गया, फिर**
**रात आई और काली,**
**लग रहा था अब न होगा**
**इस निशा का फिर सबेरा,**
**रात के उत्पात-भय से**
**भीत जन-जन, भीत कण-कण,**

किन्तु प्राची से उषा की
मोहिनी मुसकान फिर-फिर ।
नीड़ का निर्माण फिर-फिर,
नेह का आह्वान फिर-फिर ।
बह चले झोंके कि काँपे
भीम कायावान भूधर,
जड़ समेत उखड़-पुखड़ कर
गिर पड़े, टूटे विटप वर ।
हाय तिनकों से विनिर्मित
घोंसलों पर क्या न बीती !
डग मगाए जब कि कंकड़,
ईंट, पत्थर के महल-घर ।
बोल आशा के विहंगम,
किस जगह पर तू छिपा था,
जो गगन पर चढ़ उठाता
गर्व से निज वक्ष फिर-फिर !
नीड़ का निर्माण फिर-फिर,
नेह का आह्वान फिर-फिर !
क्रुद्ध नभ के बज्रदंतों
में उषा है मुस्कुराती,
घोर गर्जन-भय गगन के
कंठ से खग-पंक्ति गाती ।
एक चिड़िया चोंच में तिनका
लिए जो जा रही है,
वह सहज में ही पवन
उंचास को नीचा दिखाती !

नाश के दुख से कभी
दबता नहीं निर्माण का सुख
प्रलय की निस्तब्धता से
सृष्टि का नव गान फिर-फिर !
नीड़ का निर्माण फिर-फिर
नेह का आह्वान फिर-फिर ।

**शब्दार्थ :**

नीड़ – घोंसला, रहने या ठहरने की जगह । नेह – प्रेम, स्नेह । आह्वान – बुलावा । निशा – रात्रि । उत्पात – उपद्रव । भीत – डरा हुआ । प्राची – पूर्व दिशा । मोहिनी – मोह लेनेवाली, आकर्षक, मोहक । मुसकान – मृदुहास । भीम कायावान – बड़े शरीर वाले । भूधर – पहाड़ । विटप – पेड़, वृक्ष । वर – श्रेष्ठ । विनिर्मित – बनाहुआ । विहंगम – पक्षी, विहग । बज्र – भीषण, कठोर । क्रुद्ध – नाराज । उषा – प्रात: । खगपंक्ति – पक्षियों की कतार । पवन उनचास – अनेक प्रकार की हवाएँ (ऋक् वेद में वायु देवताओं की संख्या उनचास कही गई है । प्रलय – सृष्टि का नाश होना । निस्तब्धता – खामोशी, नीरवता ।

## प्रश्न और अभ्यास

**1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :**

(क) आँधी के कारण दिन कैसा दीखने लगा और क्यों ?

(ख) आँधी की रात कैसे लग रही थी ?

(ग) तूफान की उग्रता से कौन-कौन से विनाश होने लगे ?

(घ) आँधी को कौन और कैसे नीचा दिखाता है ?

(ङ) आँधी तूफान में भी कौन मुस्कुराता था ?

(च) नाश के दुख में किसका सुख नहीं दबता ?

(छ) प्रलय की निस्तब्धता में किसका नव गान सुनाई पड़ता था ?

(ज) गृहस्थी जोड़ने में आनेवाली किन विपत्तियों का उल्लेख कवि ने किया है ?

(झ) 'विपत्तियों के बाद सुख के दिन आते हैं' कवि ने इस भाव को किस प्रकार व्यक्त किया है ?

(ञ) नीड़ के निर्माण से कवि का क्या तात्पर्य है ?

**2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक शब्द या एक वाक्य में दीजिए :**

(क) आँधी उठने से नभ में क्या छा गया ?

(ख) बादलों ने किस को घेरा ?

(ग) उषा की मुस्कान कैसी थी ?

(घ) बड़े विटप कैसे उखड़ कर गिरे ?

(ङ) तूफान में कैसा लग रहा था ?

(च) रात कैसी थी ?

(छ) जन जन कैसे थे ?

(ज) कहाँ से उषा आई ?

(झ) घोषले किससे विनिर्मित थे ?

(ञ) गर्जनमय गगन के कंठ से कौन गाती थी ?

(ट) चिड़िया चोंच में क्या लिए जा रही थी ?

## भाषा-ज्ञान

**1. निम्नलिखित के विपरीत्त शब्द लिखिए :**

काला, अँधेरा, क्रुद्ध, नीचा, सुख, नाश, दबता, महल

**2. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए :**

रात, बादल, चिड़िया, नीड़, सबेरा, निर्माण, गगन

**3. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ बताते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिए :**

निशा, वज्र, प्रलय, विहंगम, उत्पात, भूधर, प्राची

**4. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए :**

(क) निस्तब्धता छाया हुआ है ।

(ख) काला रात आई ।

(ग) चिड़िया चहचहा रहा है ।

(घ) उषा मुस्कुराता है ।

(ङ) सृष्टि की नव गान हो रही है ।

(च) कंठ में खगपति गाती है ।

(छ) नीड़ की निर्माण होती है ।

(ज) रात-सा दिन हो गई ।

**5. निम्नलिखित वाक्यों के खाली स्थान की पूर्त्ति कोष्ठक में दिए गए शब्दों से कीजिए :**

(उषा की, तिनका, दुःख, कंकड़, बादलों ने)

(क) धूलि धूसर ———— भूमि को इस भाँति घेरा ।

(ख) प्राची से ———— मोहिनी मुसकान फिर-फिर !

(ग) डगमगाए जब कि ————, ईंट पत्थर के महल-घर ।

(घ) नाश के ———— से कभी दबता नहीं निर्माण का सुख ।

(ङ) एक चिड़िया चोंच में ———— लिए जो जा रही है ।

**अभ्यास कार्य**

(क) इस कविता की आवृत्ति कीजिए और याद रखिए ।

(ख) ऐसी एक कविता लिखकर अपने मित्रों को सुनाइए ।

■ ■ ■